आयोजन देव संस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन महायज्ञ

अनूठा-अनुपम होगा 251 कुंडीय गायत्री हवन

अत्याधुनिक संचार तकनीकों के उपयोग के साथ रखेंगे पर्यावरण का भी ध्यान

महानगर संवाददाता

जयपुर। अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वावधान में मानसरोवर में 23 से 26 नवम्बर तक होने वाला देव संस्कृति पुष्टिकरण लोक आराधन महायज्ञ हर दृष्टि से अनूठा और अनुपम होगा। इसमें आधुनिक संचार तकनीकों के उपयोग के साथ पर्यावरण संतुलन का भी पूरा ध्यान रखा जाएगा। लोगों को यज्ञ और मंत्रों की वैज्ञानिकता सप्रमाण बताई जाएगी। महायज्ञ में शामिल होने वाले श्रद्धालुओं का डेटा कंप्यूटर में एकत्र किया जा रहा है। किस जगह से कितने लोग आएंगे यह जानकारी अभी से जुटाई जा रही है। लोगों से संकल्प पत्र भरवाए जा रहे हैं और उनका डेटा एकत्र किया जा रहा है। जब वे महायज्ञ में शामिल होने के लिए आएंगे तो उन्हें यहां होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी प्रतिदिन मोबाइल पर मैसेज के माध्यम से दे दी जाएगी। महायज्ञ से जुड़े सभी व्यक्तियों के अलग-अलग व्हाटसप ग्रपु बनाए गए हैं जिनके माध्यम से वे आपस में संपर्क में रहते हुए प्रतिदिन की गतिविधियों की जानकारी आदान-प्रदान कर रहे हैं। तकनीक के साथ महायज्ञ में पर्यावरण का भी ख्याल रखा जाएगा। महायज्ञ की यज्ञशाला का निर्माण पर्यावरण के अनुकूल किया जाएगा। देसी गाय के गोबर और चिकनी मिट्टी से यज्ञशाला का चौक तैयार किया जाएगा। चारों ओर ज्वारे और पौधे लगाए जाएंगे। यहां प्रतिदिन सफाई होगी तथा प्रतिदिन कचरे का

निस्तारण होगा। भोजन की व्यवस्था पत्ते की पत्तल और दौनों में रहेगी। दिव्यांग और वृद्धजनों को प्रवेश द्वार से यज्ञशाला तक लाने-ले जाने के लिए बैटरीचालित वाहनों की व्यवस्था रहेगी। प्रतिदिन लोगों को प्रसाद के रूप में एक पौधा दिया जाएगा।

प्रत्येक गांव की मिट्टी से होगा भूमि पूजन

इस महायज्ञ में जयपुर और भरतपुर संभाग के हर गांव से लोग भाग लेंगे। प्रत्येक गांव की मिट्टी का महायज्ञ से पूर्व भूमि पूजन किया जाएगा। नवरात्र के दौरान गायत्री परिजनों की टोलियां गांवों के लिए जनसंपर्क के लिए रवाना होगी। ब्रह्मपुरी स्थित गायत्री शक्तिपीठ में महायज्ञ को लेकर गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं की कई बैठकें हो चुकी हैं। 51 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के लिए एक दर्जन से अधिक समितियों का गठन किया गया है। यज्ञशाला निर्माण, यज्ञ व्यवस्था संचालन, कलश यात्रा, वित्त, संस्कार परंपरा, सुरक्षा, पार्किंग, भोजन व्यवस्था को लेकर गठित समितियों में दो से दस सदस्यों को शामिल किया गया है।

गायत्री परिवार का हर एक आयोजन समाज को नई दिशा देने के लिए होता है। यह केवल कर्मकांडपरक आयोजन नहीं होगा, देश और समाज के लिए नए संकल्प लिए जाएंगे।

- अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव, प्रभारी, राजस्थान जोन अखिल विश्व गायत्री परिवार

परम्परा : रियासतकाल से संरक्षित है लोककला

लाड़लीजी मंदिर में सजी गिर्राज पर्वत की सांझी

श्राद्ध पक्ष में एक पखवाड़े तक मनाया जाता है सांझी महोत्सव

महानगर संवाददाता

जयपुर। रामगंज बाजार स्थित लाड़लीजी मंदिर में श्राद्ध पक्ष से शुरू हुआ सांझी महोत्सव धीरे-धीरे परवान चढ़ता जा रहा है। मंगलवार को गिर्राज पर्वत की झांकी बनाई गई। इसमें बाग-बगीचा, मानसी गंगा, घाट, परिक्रमा मार्ग बनाया गया। सूखे रंगों एवं पुष्पों से चित्रित कर पूजन एवं आरती की गई। बुधवार को राधा कुंड बनाया जाएगा। लोक संस्कृति की महक को बिखेरता ये पर्व नारी के स्वाभिमान को अभिव्यक्त करता है एवं श्री राधे कृष्ण के प्रेम विहार का उत्सव के साथ पूर्वजों के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता है। वैष्णव जन के हर घर में आंगन और तिबारे बनाने की परंपरा है। राधारानी अपने पिता वृषभान के आंगन में सांझी पितृ पक्ष में प्रतिदिन सजाती थीं। उनके भाई एवं परिवार का मंगल हो इसके लिए फूल एकत्रित करते थे और इसी बहाने श्री राधा कृष्ण का मिलन होता था। गांवों में कन्याएं एवं रसिक भक्त जन आज भी पितृ पक्ष में अपने घरों में गाय के गोबर से सांझी सजाते हैं। इसमें राधा कृष्ण की लीलाओं का चित्रण अनेक संप्रदाय के ग्रंथों में मिलता है। ऐसा विश्वास है कि श्री राधा कृष्ण उनकी सांझी को निहारने के लिए अवश्य आते हैं। मंदिर सेवायत डॉ. संजय गोस्वामी ने बताया कि शुरू में पुष्प और सूखे रंगों से आंगन को सांझी से सजाया जाता था। अब सांझी सिर्फ सांकेतिक रह गई है। सांझी महोत्सव 20 सितम्बर तक मनाया जाएगा।

विलुप्ति की कगार पर कला

संजय गोस्वामी ने बताया कि एक वक्त था जब सांझी घर-घर में बनाई जाती थी। अब यह कला विलुप्त होने की कगार पर है, जो अब कुछ मंदिरों तक ही सिमट कर रह गई है। सांझी एक कला मात्र ही नहीं, भगवान की आराधना का तरीका है। सांझी के दौरान कई पद गाए जाते हैं। इन पदों में भी राधा के कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम का वर्णन होता है। यह पर्व हमारी वैभवशाली सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रखता है। यह पर्व पुनर्जीवित करने एवं भव्यता से सामूहिक रूप से मनाने की आवश्यकता है।

श्याम बाबा का नजारा प्यारा-प्यारा

मुरलीपुरा स्कीम सर्किल पर सजा खाटूनरेश का दरबार

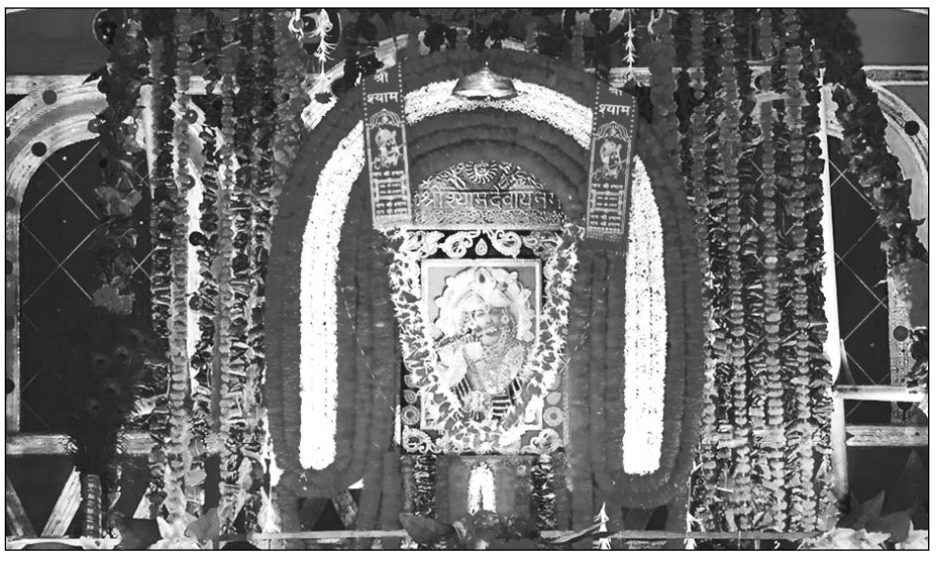

महानगर संवाददाता

जयपुर। श्री श्याम मित्र परिवार सेवा समिति, मुरलीपुरा स्कीम के 24वें श्याम महोत्सव के दूसरे दिन मंगलवार को मुरलीपुरा सर्किल पर भजन संध्या हुई। श्याम प्रभु का आकर्षक दरबार सजाकर अखंड ज्योति प्रज्जवलित की गई। पुष्प और इत्र वर्षा के बीच श्री गणेश वंदना और सरस्वती वंदना के साथ भजन संध्या का शुभारंभ हुआ। गुरु वंदना, मां भगवती और बजरंग बली के गुणगान के बाद श्याम बाबा का नजारा प्यारा-प्यारा, आएगा-आएगा श्याम बाबा प्यारा आएगा, नीले घोड़े पे सवार होके आ गया, तेरी मुरली पे जाऊं बलिहार रसिया जैसे भजन सुनाए। राजू पंवार, राज राठौड़, विनोद सैनी, विजेन्द्र भार्गव, कृष्ण कुमार सोनी सहित अनेक भजन गायकों ने रात भर श्याम प्रभु का गुणगान किया। सजीव झांकियां आकर्षण का केन्द्र रहीं। इससे पूर्व समिति के अध्यक्ष कैलाशचंद जांगिड़, सचिव शशि हरिरामानी, संरक्षक इंद्रपाल चौधरी ने महाआरती की। महेश खंडेलवाल, भवानीसिंह राठौड़, उपाध्यक्ष शंकरनारायण दास, अनिल शर्मा, रतन जांगिड़, पवन शर्मा, पं. लीलाधर चतुर्वेदी, दिनेश जांगिड़, हिमांशु शर्मा, विशाल हरिरामानी, मनोज जांगिड़, ने व्यवस्थाएं संभाली।

नारायणदासजी का जन्मोत्सव मनाया

श्री नारायणदास ज्योतिष केंद्र के तत्वावधान में मंगलवार को मुरलीपुरा स्थित कार्यालय में त्रिवेणी पीठाधीश्वर नारायणदासजी महाराज का जन्मोत्सव मनाया गया। पं. उत्तम शर्मा के सान्निध्य में सुंदरकांड के संगीतमय पाठ हुए। सुशील माथुर, नीता माथुर ने भजनों के साथ सुंदरकांड के पाठ किए। पार्षद सुशील शर्मा, अधिवक्ता अनूप माथुर, कांग्रेस नेता पवन शर्मा, भावना शर्मा, अंजली यादव, रविन्द्र शर्मा ने आरती उतारी।

कलशयात्रा के साथ भागवत कथा का शुभारंभ

महानगर संवाददाता

जयपुर। खातीपुरा स्थित श्री सीताराम जी नागणेच्या माता के मंदिर में मंगलवार को कलश यात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ का शुभारंभ हुआ। गाजेबाजे के साथ निकली कलशयात्रा में 101 महिलाएं सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थीं। खिरणी फाटक स्थित लाल मंदिर से शुरू हुई कलशयात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए कथास्थल पहुंची। कथा स्थल पर व्यासपीठ से आचार्य घनश्यामदास जादौन और आयोजक अमरसिंह राठौड़ ने आरती की। कथा 18 सितम्बर तक होगी।

गाय-गीता संस्कृति के आधार :ज्ञानानंद महाराज

महानगर संवाददाता

जयपुर। श्रीश्याम भजन संध्या परिवार सेवा समिति के रजत जयंती महोत्सव के चौथे दिन मंगलवार को शास्त्रीनगर स्थित खंडेलवाल कॉलेज में गोसेवा और भगवत गीता पर प्रवचन हुए। व्यासपीठ से गीता मनीषी ज्ञानानंद महाराज ने प्रवचन किया। उन्होंने कहा कि गीता और गाय भारतीय संस्कृति के आधार स्तंभों में हैं लेकिन दोनों की ही स्थिति बेहद खराब है।

उन्होंने कहा जरा-जरा सी बात को अपने मन की एकाग्रता को भंग न करने की आज्ञा न दो। मन की शांति हर स्थिति में बनाए रखो और मन की शांति को इतना सस्ता न बनाएं। यह बहुत ही अनमोल संपदा है। मुख्य अतिथि विधायक दीया कुमारी ने आरती कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। 13 सितम्बर को शाम 6 बजे महाराणा प्रताप सभागार में हारे का सहारा और जीवन प्रबंधन पर विजयशंकर मेहता का व्याख्यान होगा। मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया होंगे। 14 सितम्बर को सुबह 7 बजे से शास्त्रीनगर के खंडेलवाल कॉलेज में गायत्री परिवार के सहयोग से 108 कुंडीय श्याम महायज्ञ होगा।

श्रीश्याम भजन संध्या परिवार सेवा समिति का रजत जयंती महोत्सव